विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2556, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 28 दिसंबर, 2012 वर्ष 42 अंक 7

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

... 'चरथ, भिक्खवे, चारिकं बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं; देसेथ, भिक्खवे, धम्मं आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं...।

(दीघनिकाय- २.३५-३६)

'भिक्षुओ, बहुतों के हित के लिए, बहुतों के सुख के लिए, लोक पर अनुकंपा के लिए, देवताओं और मनुष्यों के प्रयोजन के लिए, हित के लिए, सुख के लिए, विचरण करो। आदि में कल्याणकारक, मध्य में कल्याणकारक, अंत में कल्याणकारक धर्म का उपदेश करो।...

बाहरी वेश-भूषा से श्रमण नहीं

एक बार भगवान श्रावस्ती के पूर्वाराम में विहार कर रहे थे। वहां महाराज प्रसेनजित भी आया। थोड़ी देर में कुछ जटा-जटिल, भस्म-भभूत लपेटे तथा नंगे साधु-संन्यासी विभिन्न प्रकार की वेश-भूषा में उनके सामने से गुजरे। महाराज प्रसेनजित ने उठ कर उनका अभिवादन किया और अपना परिचय दिया। आशीर्वाद देते हुए वे अपने रास्ते पर चले गये। तत्पश्चात प्रसेनजित ने भगवान से कहा--

भगवान! जो लोक में अरहंत हैं या अर्हत मार्ग पर आरूढ़ हैं, ये साधु भी उन्हीं में से हैं। भगवान ने उनकी दशा देख कर कहा--

नहीं महाराज! केवल वेश बदल लेने से कोई व्यक्ति अरहंत या अरहंत मार्ग पर आरूढ़ नहीं हो जाता। उसके लिए उसे सम्यक प्रकार से प्रयत्न करना पड़ता है। किसी को सम्यक मार्ग मिल जाय फिर भी वह ठीक ढंग से उस मार्ग पर चल रहा है या नहीं, इसे जानने के लिए किसी समझदार व्यक्ति को दीर्घकाल तक उसके संपर्क में रहना आवश्यक है। थोड़े समय में उसके आचरण के बारे में सही जानकारी नहीं मिल सकती। महाराज किसी के व्यवहार से ही उसकी ईमानदारी या बेइमानी का पता चलता है। वह भी दीर्घकाल तक उसके दैनिक क्रिया-कलापों पर ध्यान रखने पर ही।

कोई प्रज्ञावान पुरुष ही उसके व्यवहार पर ठीक से ध्यान रख सकता है, सब लोग नहीं। विपत्ति पड़ने पर ही मनुष्य-मन की स्थिरता का पता चलता है। इसी प्रकार दीर्घकाल तक बात-चीत करने पर ही उसकी प्रज्ञा का पता चलता है।

इस व्याख्या से महाराज प्रसेनजित बहुत प्रभावित हुआ और साश्चर्य क्षमायाचना करते हुए उसने स्वयं ही सच्चाई उजागर करते हुए कहा--

भगवान! ये सब मेरे गुप्तचर हैं और वेश बदल कर आंतरिक तथा पड़ोसी राज्यों की गतिविधियों के भेद लेते हैं और मुझे सूचित करते रहते हैं। उसके अनुसार सोच-समझ कर मैं आवश्यक कार्यवाही करता हूं। भंते भगवान! अब ये लोग भस्म-भभूत को धोकर, स्नान करके, उबटन लगा कर, उजले वस्त्र पहन कर पांच कामगुणों का भोग करेंगे।

इस पर भगवान ने समझाया--

केवल ऊपरी वेश-भूषा से मनुष्य को जाना नहीं जा सकता। केवल बाहरी वेश देख कर किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए। बड़े संयमपूर्ण और आकर्षक कार्य करते हुए भी दुष्टजन विचरण किया करते हैं। मिट्टी या लोहे पर सोने का पानी चढ़ाया हुआ नकली कुंडल भी आकर्षक होता है। ऐसे ही चमकदार वेश बना कर विचरण करने वाले भीतर से मैले और बाहर से चमकते नजर आते हैं। अर्थात बिना जाने समझे किसी बाहरी दिखावे के आधार पर कभी विश्वास मत करो। उसके आचरण को जान-समझ कर ही विश्वास करना चाहिए।

सही श्रमण

एक बार भगवान अंग देश के अश्वपुर कस्बे में विहार कर रहे थे। वहां भगवान ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा--

भिक्षुओ! 'श्रमण' 'श्रमण' कह कर लोग किसी को पुकारते हैं और पूछने पर भी वह अपने आपको 'श्रमण' कहता है। ऐसी संज्ञा और ऐसा दावा करने वाले लोगों को श्रमणता का जो मार्ग है उसे सिद्ध करना होता है कि वह सही माने में उस मार्ग पर आरूढ़ है। उसके लिए ही लोग उसे चीवर, भिक्षा, निवास, औषधि तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं का दान देते हैं। उनका दिया हुआ दान तभी सफल होता है जबकि 'श्रमण' की प्रव्रज्या निर्मल, सदाचरणयुक्त और लोगों के मंगल में सहायक हो।

भिक्षुओ! कोई श्रमण-मार्ग पर कैसे आरूढ़ नहीं हो पाता? जिस भिक्षु का जब तक लोभ नष्ट नहीं होता, ऐसे ही क्रोधी का क्रोध, वैरी का वैर, अमरख की अमरखता, निष्ठुर की निष्ठुरता, ईर्ष्यालु की ईर्ष्या, कंजूस की कंजूसी, शठ की शठता, पापेच्छु की पापेच्छा, मिथ्यादृष्टि वाले की मिथ्यादृष्टि आदि नष्ट नहीं होती तब तक वह सही भिक्षु नहीं हो सकता। ये सब उसके लिए श्रमण के मैल हैं, मार्ग की बाधाएं हैं, अपायगति की ओर ले जाने वाले हैं। ऐसे भिक्षुओं की प्रव्रज्या को मैं दो-धारी हथियार की संज्ञा देता हूं जिसे कोई चीवर में छुपा कर, ढंक कर रखे तो वह चीवर को ही काट दे। उक्त मैलों से युक्त कोई व्यक्ति चाहे चीवरधारी हो, वस्त्ररहित (नग्न) हो, चाहे कीचड़धारी हो, भस्म धारण करता हो,

जलवासी हो, पेड़ के नीचे रहता हो, पेड़ की छाल पहनता हो, खुले मैदान में रहता हो, सदा खड़े रहता हो, बीच-बीच में निराहार रह कर भोजन करता हो, वेद-पाठी हो, मंत्र का अध्ययन करने वाला हो-- इनमें से किसी को मैं श्रमण नहीं कहता।

सही श्रमण तभी होगा जब उपरोक्त चित्त के मैलों को त्याग देगा। इन चित्त के मैलों को दूर करने के लिए निरंतर चित्त-शुद्धि के मार्ग का अभ्यास करता रहे और विकारों से मुक्त होकर सही श्रमण का जीवन जीने लगे।

भिक्षुओ! कोई श्रमण समीचीन मार्ग पर कैसे आरूढ़ होता है?

जिस भिक्षु की मिथ्यादृष्टि नष्ट हो जाती है, जो क्रोध, लोभ, वैर आदि सभी चित्त के मैलों से मुक्त होता है, वही समीचीन मार्ग पर आरूढ़ हुआ माना जाता है। तभी वह अपने आपको विशुद्ध, विमुक्त हुआ कह सकता है। इस प्रकार के चित्त के मैलों से विमुक्त हुए भिक्षु के मन में प्रमोद उत्पन्न होता है। प्रमुदित चित्त में प्रीति उत्पन्न होती है। प्रीतियुक्त पुरुष की काया स्थिर होती है। वह स्थिर-शरीर सुख अनुभव करता है। यों सुखी चित्त समाहित (एकाग्र) होता है। वह मैत्रीयुक्त चित्त से एक दिशा को परिप्लावित करके विहरता है। फिर दूसरी दिशा, तीसरी दिशा, चौथी दिशा, ऊपर तथा नीचे की दिशा यानी सभी दिशाओं को मैत्रीचित्त से परिप्लावित करता हुआ सभी प्राणियों के प्रति द्वेषरहित हो अपरिमित मैत्री, करुणा, मुदिता तथा उपेक्षायुक्त चित्त से विहार करता है। सब को सुख पहुँचाता है, सब के मंगल में सहायक होता है। यों उसका श्रमण कहलाना सार्थक हुआ माना जाता है।

जैसे भिक्षुओ! किसी स्वच्छ, शीतल, मधुर जलयुक्त सुंदर घाटों वाला तालाब हो और पूर्व दिशा से कड़ी धूप से संतप्त, तृषित कोई पुरुष आकर उस तालाब में उतर कर अपनी प्यास दूर करता है, धूप की ताप को दूर करता है। इसी प्रकार पश्चिम दिशा से भी, उत्तर दिशा से भी एवं दक्षिण दिशा से भी आकर अपनी प्यास बुझाते हैं, धूप की ताप दूर करते हैं। ऐसे ही भिक्षुओ! कोई क्षत्रिय-कुल से बेघर होकर, प्रव्रजित हो तो वह तथागत के उपदेशित धर्म को प्राप्त कर, मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा की भावना करके आध्यात्मिक शांति प्राप्त करता है। वह आध्यात्मिक शांति प्राप्त श्रमण समीचीन मार्ग पर आरूढ़ है। इसी प्रकार ब्राह्मण कुल से, वैश्य कुल से या शूद्र कुल से भी बेघर होकर, प्रव्रजित होते हैं और तथागत के उपदेश के अनुसार चल कर यानी विपश्यना भावना का अभ्यास करते हुए मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा की भावना करते हैं तो सही श्रमणत्व के भागीदार बन जाते हैं। वे सभी आस्रवों, चित्त के मैलों से रहित होकर चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी जीवन में स्वयं जान कर, साक्षात करके विहरते हैं।

वस्तुतः आस्रवों के क्षय से ही सही श्रमण होता है। चाहे वह किसी भी कुल से क्यों न आया हो। जाति उसके मार्ग में बाधक नहीं बन सकती।

आओ, साधको! हम भी धर्मपथ पर कदम-कदम चलते हुए सभी प्रकार के चित्त के मैलों से मुक्त होकर अपना मंगल साधें, अपना कल्याण साधें!

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

केंद्रीय एवं समन्वयक आचार्यों को संबोधन

मेरे प्यारे धर्मपुत्रों तथा धर्म पुत्रियों!

तुम सबके प्रति मेरी मंगल कामनाएं!

अपने गुरुदेव की इच्छा के अनुसार विपश्यना सिखाते हुए मुझे आज ५० से भी अधिक वर्ष हो गये हैं। मैंने पहले म्यंमा में और बाद में १९६९ से भारतवर्ष में धर्म सिखाया। सयाजी ने मुझे धर्म का गंभीर प्रशिक्षण दिया और जैसा कि तुम सभी जानते हो, उनकी बलवती इच्छानुसार मैं तुम सभी की सहायता से विपश्यना को भारतवर्ष तथा समस्त विश्व में पुनः प्रतिष्ठापित कर सका। हम सभी सयाजी के सपनों को साकार करने और द्वितीय बुद्धशासन को यथाशक्ति सहयोग देने में सफल हो सके।

मुझे आज भी वह दिन याद आता है जब सयाजी ने कहा था – 'गोयन्का, भारत तुम नहीं जा रहे हो, म्यंमा पर भारत का जो ऋण है उसे अदा करने मैं जा रहा हूँ। तुम्हारे साथ धर्म जा रहा है!' उन्होंने मुझ पर कोई परामर्शक समिति नहीं बिठाई। केवल धर्म की गहरी समझ और अपने गहन निर्देशों के साथ भेजा, जिसका मैंने पूर्ण निष्ठा से पालन किया। जब-जब आवश्यकता हुई, मैंने उनसे परामर्श किया। हालांकि भारत में आने के बाद प्रारंभ के तीन वर्षों तक ही मुझे उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन का लाभ मिल सका, लेकिन उनके दिवंगत होने केबावजुद उनके विशद आशीर्वाद मुझे आज भी प्राप्त है।

मैं ५० से भी अधिक वर्षों से, स्वतंत्र रूप से, अपने आचार्य द्वारा दिये गये निर्देशानुसार धर्म की सेवा कर रहा हूं। मैं चाहता हूं कि अब तुम सब भी मेरी तरह, समान सामर्थ्य और उत्तरदायित्व के साथ धर्म की शुद्धता को कायम रखते हुए धर्म की सेवा करो! विश्व के लोगों के भले के लिए धर्म का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करो। अब तुम स्वावलंबी हो। जब तक मेरे प्राण है, तुम मुझसे आवश्यकतानुसार परामर्श मांग सकते हो। उसके पश्चात भी मेरा आशिर्वाद तो सदैव तुम्हारे साथ रहेगा ही।

धर्म का प्रचार-प्रसार सारे विश्व में हुआ है, इसलिए मैं केंद्रानुसार तथा क्षेत्रानुसार उत्तरदायित्व सौंप रहा हूं। हर केंद्र में धर्म-कार्य की देख-रेख के लिए केंद्रीय आचार्य को नियुक्त किया है। इन केंद्रीय आचार्यों की यथावश्यक सहायता करने के लिए तथा अपने-अपने क्षेत्र में धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समन्वयक क्षेत्रीय आचार्यों की नियुक्ति की है।

यहां एक सूची संलग्न है जिसमें विश्वभर के केंद्रीय व समन्वयक क्षेत्रीय आचार्यों के नाम तथा उनका उत्तरदायित्व परिभाषित किया गया है। नवनिर्मित विश्वव्यापी संगठन के लिए बनाये गये कुछ निर्देश भी संलग्न हैं।

अब आप स्वावलंबी हो, तथापि अपने से वरिष्ठ के प्रति तुम्हारे मन में आदर और सम्मान का भाव अवश्य हो। केंद्रीय आचार्य अपने-अपने केंद्र के प्रभारी रहेंगे और समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य अपने गहरे और विस्तृत अनुभव के आधार पर आवश्यकतानुसार उनकी सहायता करेंगे, उनका दिशा-निर्देशन करेंगे। मुख्य जिम्मेदारी के रूप में वे अपने-अपने क्षेत्र में धर्म का प्रचार-प्रसार करेंगे।

मेरी यह भी इच्छा है कि तुम में से जिन्होंने ४५ या

६०-दिवसीय शिविर में भाग नहीं लिया है, वे अपनी सुविधानुसार यथाशीघ्र उसमें सम्मिलित हों।

धर्मपथ पर प्रगति करने के लिए मैं तुम सभी को अपनी मंगल-कामनाएं देता हूं। मेरी प्रभूत मैत्री सदा तुम्हारे सबके साथ रहेगी।

मंगल मैत्री सहित,
सत्यनारायण गोयन्का

भारत के विपश्यना केंद्र तथा केंद्रीय आचार्यों की सूची

महाराष्ट्र

विपश्यना केंद्र	केंद्रीय आचार्य
१. धम्म गिरि	श्री प्रेमजी एवं श्रीमती मधु सावला
२. धम्म तपोवन-१ व २	श्री प्रेमजी एवं श्रीमती मधु सावला
३. धम्म नाग	श्री सुधीर एवं श्रीमती माधुरी शाह
४. धम्म सुगति	श्री विश्वंभर दहाट
५. धम्म सरोवर	श्री प्रकाश महाजन
६. धम्म आनन्द	डॉ. हमीर एवं डॉ. (श्रीमती) निर्मला गानला
७. धम्म पुण्ण	डॉ. निखिल मेहता
८. धम्म आलय	श्री प्रकाश एवं श्रीमती सुभांगी बोरसे
९. धम्म सरिता	श्री श्याम सुंदर तापड़िया
१०. धम्म अजन्ता	श्री चंपालाल खींवसरा
११. धम्म मनमोद	श्री अभिजीत पाटील
१२. धम्म नासिका	श्री अशोक एवं श्रीमती पुष्पा पवार
१३. धम्म वाहिनी	श्री प्रीति डेढ़िया
१४. धम्म विपुल	श्री अरुण तोषणीवाल
१५. धम्म पत्तन	श्री महासुख एवं श्रीमती मंजू खंधार
१६. धम्म साकेत (धम्म गृह)	श्री दीपक पगारे
१७. धम्म अनाकुल	श्री मोहनलाल अग्रवाल
१८. धम्म अजय	श्री बाबूराव शिंदे
१९. धम्म मल्ल	श्री नामदेव डोंगरे
२०. धम्म भूसन (धम्म गृह)	श्री प्रकाश महाजन
२१. धम्म वसुधा	श्रीमती निर्मला (मीरा) चिंचखेड़े
२२. धम्म छत्तपति	श्री भानुदास रसाल
२३. धम्म आवास	श्री महावीर एवं श्रीमती अंजना पाटील
२४. धम्म निरञ्जन	श्री चंद्रशेखर दहिवेले
२५. धम्म गोंद	श्री दिनेश देशमुख

उत्तरी भारत

१. धम्म थली	श्री विमलचंद सुराना एवं श्री शेरसिंह जैन
२. धम्म पुष्कर	श्रीमती सज्जनदेवी धारीवाल
३. धम्म मरुधरा	श्री प्रभुदयाल सोनगरा
४. धम्म पुब्बज	श्री सुरेश एवं श्रीमती रेणु खन्ना
५. धम्म सोत	श्री मुरारीलाल शर्मा
६. धम्म पट्ठान	कु. मनमोहिनी रस्तोगी
७. धम्म करुणिका	श्री रामनिवास गौतम
८. धम्म सिखर	श्रीमती मंजू वैश
९. धम्म लद्ध	श्री प्रमोदकुमार भावे
१०. धम्म सलिल	श्री अशोक कुमार नागपाल
११. धम्म धज	श्री के. एल. शर्मा
१२. धम्म तिहाड़	श्री प्रवीण भल्ला
१३. धम्म सुवत्थि	श्री गोपाल शरण एवं श्रीमती पुष्पा सिंह
१४. धम्म चक्क	श्रीमती बीना मेहरोत्रा
१५. धम्म लक्खण	श्री रुद्रदत्त तिवारी
१६. धम्म कल्याण	श्री प्रवीण भल्ला

गुजरात

१. धम्म सिन्धु	डॉ. भीमसी एवं श्रीमती पुष्पा सावला
२. धम्म पीठ	श्री इंद्रवदन कोठड़िया
३. धम्म कोट	श्री राजेश एवं श्रीमती मनीषा मेहता
४. धम्म दिवाकर	श्री अनिल एवं श्रीमती सुनीता धर्मदर्शी
५. धम्म भवन (धम्म गृह)	श्री रमणिकलाल एवं श्रीमती कमला मेहता
६. धम्म अम्बिका	श्री जयंतिलाल एवं श्रीमती कमला ठक्कर

मध्य एवं पूर्वी भारत

१. धम्म गङ्गा	श्री लक्ष्मीनारायण एवं श्रीमती पुष्पा तोदी
२. धम्म बङ्ग	श्री श्याम एवं श्रीमती कांता खद्दरिया
३. धम्म उत्कल	श्री हरिलाल साहू
४. धम्म कानन	श्री दिनेश मेश्राम
५. धम्म पाल	श्री अशोक एवं श्रीमती उमा केला
६. धम्म बल	श्रीमती प्रमिला शाह
७. धम्म रत	श्री नारायण एवं श्रीमती शारदा वाधवानी
८. धम्म मालवा	श्रीमती शीला केला
९. धम्म केतु	श्री सुधाकर खैरे
१०. धम्म लिच्छवी	डॉ. ईश्वरचंद्र सिन्हा
११. धम्म बोधि	श्री बिक्रम डांडिया
१२. धम्म उपवन (धम्म गृह)	श्री गोपाल एवं श्रीमती पुष्पा सिंह
१३. धम्म पुरी	श्री लक्ष्मीनारायण एवं श्रीमती पुष्पा तोदी
१४. धम्म सिक्किम	श्रीमती शीलादेवी चौरसिया
१५. धम्म पुब्बोत्तर	श्री मोहन दीवान
१६. धम्म भुबनेश्वर	श्री अनंत जेना

दक्षिणी भारत

१. धम्म खेत्त	श्री पिडुगु रविंद्र रेड्डी
२. धम्म सेतु	श्री वी. शांतनगोपालन
३. धम्म पफुल्ल	श्रीमती जया संगोई
४. धम्म निज्झान	श्री एस. एन. सहा
५. धम्म विजय	श्री मोहन राज अडला
६. धम्म नागाज्जुन	श्री मोहन राज अडला
७. धम्म राम	श्री सत्यनारायण राजू
८. धम्म कोण्डञ्ञ	श्रीमती सबरीना कटकम
९. धम्म केतन	श्री सुधीर पई
१०. धम्म मधुरा	श्रीमती रेणुका मेहता

अन्य देशों के केंद्र तथा केंद्रीय आचार्यों की सूची

उत्तरी अमेरिका

विपश्यना केंद्र	केंद्रीय आचार्य
१. धम्म धरा	श्री बैरी एवं श्रीमती केट लैपिंग
२. धम्म कुञ्ज	श्री रिक एवं श्रीमती गेअर क्रचर
३. धम्म महावन	श्री जॉन एवं श्रीमती गेल बिआरी
४. धम्म सिरी	श्री थॉमस एवं श्रीमती टीना क्रिसमन
५. धम्म मण्ड	श्री पार्कर एवं श्रीमती लौरा मिल्स
६. धम्म पकास	श्री डेनिस एवं श्रीमती लुइ आस्टिन
७. धम्म वड्ढन	श्री रॉय मेनेजेस एवं श्रीमती सुलेका पुसविला
८. धम्म पताका	श्री ब्रूस एवं श्रीमती मौरीन स्टिवर्ट

कनाडा

१. धम्म सुत्तम	श्री एलेन एवं श्रीमती रसेल लेपाईं
२. धम्म तोरण	श्री बिल एवं श्रीमती वर्जीनिया हैमिल्टन
३. धम्म सुरभि	श्री बॉब एवं श्रीमती जेनी जेफ्स

४. धम्म मोदन	कु. इवी चौन्सी
५. धम्म करुणा	(अभी अनिश्चित)

रूस

१. धम्म दुल्लभ	श्री जार्गन एवं श्रीमती एला मै स्टोवासर

दक्षिणी अफ्रीका

१. धम्म पताका	श्री महासुख एवं श्रीमती मंजु खंधार

यूरोप

१. धम्म पधान, यू.के.	श्री जॉन एवं श्रीमती जोआना लक्सफोर्ड
२. धम्म दीप, यू. के.	श्री कर्क एवं श्रीमती रिनेट ब्राउन
३. धम्म सुखकारी, यू. के.	कु. नीला हलाई
४. धम्म सुमेरु, स्विट्जरलैंड	श्री क्रिसचियन एवं श्रीमती रोसी हिल्ड
५. धम्म अटल, इटली	श्री सर्जिओ बोरसा
६. धम्म पज्जोत, बेल्जियम	श्री डिर्क ट्वैर्न एवं श्रीमती माइक द विल्ड
७. धम्म मही, फ्रांस	श्री स्टीव एवं श्रीमती आल्विन स्मिथ
८. धम्म निलय (धम्म गृह), फ्रांस	श्री स्टीव एवं श्रीमती आल्विन स्मिथ
९. धम्म द्वार, जर्मनी	कु. फ्लोह लेहमैन
१०. धम्म नेरु, स्पेन	श्री मार्टिन एवं श्रीमती डेनी स्टीफेन्स
११. धम्म सोभन, स्वीडेन	श्री कैनेथ ट्रूवूडसन
१२. धम्म पल्लव, पोलैंड	श्री क्लाउस एवं श्रीमती एडिथ नोनागेल

नेपाल

१. धर्मशृंग	श्री रूप एवं श्रीमती बीना ज्योति
२. धम्म तराई	श्री उत्तमरत्न एवं श्रीमती ज्ञानु धाख्वा
३. धम्म जननी	श्री बोधिबज्र एवं श्रीमती नानी छोरी बज्राचार्य
४. धम्म बिराट	श्री भक्तप्रसाद पौडियाल
५. धम्म चितवन	श्री नारायण प्रसाद तिवारी
६. धम्म कित्ति	श्री आदिरत्न शाक्य
७. धम्म पोक्खर	श्री शील बहादुर बज्राचार्य
८. धम्म सुरक्खेत्त	श्री पूरण प्रसाद ढकाल

कम्बोडिया

१. धम्म लट्ठिका	श्री फ्रेंकोइस काउच

हांगकांग

१. धम्म मुत्त	श्री ग्रेगरी एवं श्रीमती आइरीन वॉंग

इंडोनोशिया

१. धम्म जावा	श्री ज्योफरी व्हाइट

ईरान

१. धम्म ईरान	श्री दर्यूश नोजोहूर

इजरायल

१. धम्म पमोद	श्री बिल हॉर्ट

कोरिया

१. धम्म कोरिया	श्री बिल एवं श्रीमती एन्न क्रिसिलियस

जापान

१. धम्म भानु	श्री डेरिक एवं श्रीमती यूकिको फिलिप्स
२. धम्म आदिच्च	श्री क्रिस एवं श्रीमती सचिको वीडन

मलेशिया

१. धम्म मलय	श्री डॉन एवं श्रीमती सैली मेक्डॉनाल्ड

मंगोलिया

१. धम्म महान	(अभी अनिश्चित)

म्यंमा

१. धम्म जोति	ऊ थांग पे एवं डॉ मिंट मिंट टिन
२. धम्म रतन	ऊ थिन त्वे
३. धम्म मण्डप	डॉ मि मि मियांग
४. धम्म मण्डल	ऊ म्या क्वा
५. धम्म मुकुट	डॉ, मौं मौं अइ एवं डॉ यि यि विंग
६. धम्म मनोरम	डॉ न्यो विन
७. धम्म महिमा	डॉ म्या ले खैं
८. धम्म मनोहर	ऊ टिन औं एवं डॉ खैं मिंट मैं
९. धम्म निधि	डॉ ये मा मा नैं
१०. धम्म ञाणधज	ऊ बा थान
११. धम्म लाभ	श्री परसुराम गौतम
१२. धम्म मग्ग	श्रीमती सुशीला गोयन्का (डॉ निनि श्वे)
१३. धम्म महापब्बत	ऊ की थेन एवं डॉ टिन टिन ये
१४. धम्म चेतियपट्ठार	(अभी अनिश्चित)
१५. धम्म मयूरदीप	डॉ. ऊ थेन ठुन
१६. धम्म पब्बत	डॉ. म्यो औं एवं डॉ खिन थान
१७. धम्म हितसुख गेह	ऊ सान ल्विन एवं डॉ टिन टिन नैं
१८. धम्म मित्तयान	ऊ मौं मौं सैं
१९. धम्म रक्खित	ऊ क्वा ठु एवं डॉ की की टुन
२०. धम्म विमुत्ति	ऊ को को

फिलिपाईन्स

१. धम्म फल	श्री क्लाउस एवं श्रीमती नाडिया हेल्विग

श्रीलंका

१. धम्म केतु	श्रीमती दमयंती रतवत्ते
२. धम्म सोभा	श्री टी. ए. पियसेना
३. धम्म अनुराध	श्री डी. एच. हेनरी

ताईवान

१. धम्म उदय	श्री जॉर्ज हैशियो
२. धम्म विकास	श्री पिं सां वांग

थाईलैंड

१. धम्म कमल	डॉ. (श्रीमती) विलाइवन सितासुवन
२. धम्म आभा	कु. जितिनुन ज्युचारोंस्कुल
३. धम्म सुवण्ण	श्री आम्नात ओपिचारवुलोप
४. धम्म कञ्चन	श्री विचित एवं श्रीमती पोम्फेन लीनतफों
५. धम्म धानि	श्रीमती लदाचेत सेइंगम
६. धम्म सीमन्त	श्री नीरंद एवं सुत्थी छायोडम
७. धम्म पोराणो	श्री जुइचेन लिमचित्ति
८. धम्म पुनेति	श्री इतिपोन एवं श्रीमती मोंटा टोंगिनेट
९. धम्म चन्दपभा	कु. पत्र पत्रबुत्र

मेक्सिको एवं लैटिन अमेरिका

१. धम्म मकरन्द	श्री जर्मन केनो एवं श्रीमती मार्था मोलिना
२. धम्म सन्ति	श्री अर्थर निकोल्स
३. धम्म वेणुवन	कु. मिरजैम बर्न्स
४. धम्म पसन्न	कु. मकरैना इन्फेंट
५. धम्म सुखदा	श्री पार्कर एवं श्रीमती लौरा मिल्स
६. धम्म सुरिय	श्री पार्कर एवं श्रीमती लौरा मिल्स
७. धम्म नन्दनवन	श्री अर्थर निकोल्स

आस्ट्रेलिया

१. धम्म भूमि	श्री पेट्रिक गिवेन विल्सन एवं श्रीमती मैरी मेक्लोएड
२. धम्म पस्सद्धि	श्रीमती लैरेन डोनेमन

३. धम्म रस्मि श्रीमती एनी चेरियल डोनेमन
४. धम्म उज्जल श्री माइकल एवं श्रीमती तरिस बरनेस
५. धम्म पभा श्री अर्न्स्ट एवं श्रीमती कैरेन आरनोल्ड
६. धम्म आलोक श्री सिचान सेल्किन
७. धम्म पदीप श्री वोल्कर बोजमेन एवं श्रीमती डोरिस हरमैन

न्यूजीलैंड

१. धम्म मेदिनी श्री रॉस रैनॉल्ड्स

विश्व-विपश्यना केंद्रों के प्रादेशिक समन्वयक आचार्यों की सूची

प्रदेश/देश — समन्वयक आचार्य/आचार्या

भारत

- **जम्मू एवं काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तरांचल** -- श्री प्रवीण भल्ला
- **उत्तर प्रदेश, झारखंड** -- श्री प्रवीण भल्ला
- **बिहार** -- श्री विमलचंद सुराना
- **मध्य प्रदेश** -- श्री अशोक एवं श्रीमती उमा केला
- **छत्तीसगढ़** -- श्री सुधीर एवं श्रीमती माधुरी शाह
- **उड़ीसा, वेस्ट बंगाल, आसाम, अरुणाचल, त्रिपुरा, मिजोरम** -- श्री एल. एन. तोदी
- **सिक्किम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर** -- श्रीमती शीलादेवी चौरसिया
- **आंध्रप्रदेश, कर्नाटक** - श्री मोहनराज अडला एवं श्रीमती सबरीना कटकम
- **तमिलनाडु** -- श्री विमलचंद सुराना
- **केरल** -- श्री सुधीर पई
- **महाराष्ट्र (जनपदानुसार)** --

(१) विदर्भ (अकोला, यवतमाल, वर्धा, नागपुर, भंडारा, चंद्रपुर, गढ़चिरोली - श्री सुधीर एवं श्रीमती माधुरी शाह तथा श्री विश्वम्भर दहाट

(२) बुलढाणा, जालना, परभणी, बीड, नांदेड़, लातूर, उस्मानाबाद, औरंगाबाद - श्री चंपालाल खींवसरा

(३) सिंधुदुर्ग, कोल्हापुर, सांगली, सोलापुर, सतारा, रतनागिरी, गोवा - श्री प्रकाश एवं श्रीमती शुभांगी बोरसे

(४) धुले, जलगांव, अहमदनगर, रायगढ़, पुणे - डॉ. हमीर एवं डॉ. (श्रीमती) निर्मला गानला

(५) ठाणे, मुंबई, नासिक - श्री महासुख एवं श्रीमती मंजू खंधार तथा श्री प्रेमजी एवं श्रीमती मधु सावला

- **राजस्थान** -- श्री विमलचंद सुराना एवं श्री शेरसिंह जैन
- **गुजरात** --

(१) कच्छ - श्री भीमसी एवं श्रीमती पुष्पा सावला
(२) सौराष्ट्र - श्री राजेश एवं श्रीमती मनीषा मेहता
(३) अहमदाबाद और शेष उत्तरी गुजरात - श्री काश्यप एवं श्रीमती कमला धर्मदर्शी
(४) भड़ौंच और अहमदाबाद के अतिरिक्त मध्य गुजरात - श्री रमणिक लाल मेहता
(५) ऊमरगांव (वापी) से भड़ौंच सहित दक्षिणी गुजरात - श्री जयंतीलाल एवं श्रीमती कमला ठक्कर

अन्य देशों की सूची

प्रदेश/देश — समन्वयक आचार्य/आचार्या

अमेरिका -

- **अमेरिका ९२ डिग्री अक्षांश के पूर्व**- श्री बैरी एवं श्रीमती केट लैपिंग
- **शेष अमेरिका के राज्य** - श्री थॉमस एवं श्रीमती टीना क्रिसमन
- **मेक्सिको एवं लैटिन अमेरिका**- श्री आर्थर निकोलस और श्री पार्कर एवं श्रीमती लोरा मिल्स

कनाडा - श्री बिल एवं वर्जिनिया हैमिल्टन

अफ्रीका -

- **दक्षिणी अफ्रीका** - श्री महासुख एवं श्रीमती मंजू खंधार
- **मध्य और उत्तरी अफ्रीका**- श्री लेथ एवं श्रीमती मेलिनी वार्क
- **ऊपरी अफ्रीका** - श्री दर्यूश नोजोहूर
- **शेष अफ्रीका** - श्री डेनियल मेयर

यूरोप --

- **जर्मनी, इटली, स्वीडन और रूस सहित पूर्वी देश** - कु. फ्लोह लेहमन
- **शेष यूरोप** श्री क्रिस एवं श्रीमती सचिको वीडन

एशिया -

- **नेपाल** - श्री रूप एवं श्रीमती बीना ज्योति
- **कंबोडिया** - श्रीमती सुत्थी छायोडम एवं कु. जितिनुन ज्युचारोंस्कुल
- **हांगकांग** - श्री ग्रेगरी एवं श्रीमती आइरीन वांग
- **इंडोनेशिया** - श्री ज्योफ्री व्हाइट
- **ईरान** - श्री दर्यूश नोजोहूर
- **कोरिया** - श्री बिल एवं श्रीमती ऐन्न क्रिसिलियस
- **जापान** - श्री क्रिस एवं श्रीमती सचिको वीडन
- **मलेशिया, सिंगापुर, फिजी** - श्री डॉन एवं श्रीमती सैली मेक्डोनाल्ड
- **मंगोलिया** - (अभी अनिश्चित)
- **म्यंमा** - डॉ येमा मॉ नैं
- **श्रीलंका** - श्रीमती दमयंती रतवत्ते
- **ताईवान** - श्री जॉर्ज हैशियो
- **थाईलैंड** - कु. जितिनुन ज्युचारोंस्कुल
- **यू. ए. ई., ओमान** और **बहरीन** सहित-- **खाड़ी (GCC) के देश**- श्री रतिलाल एवं श्रीमती चंचल सावला
- **इजराइल** - श्री बिल हॉर्ट
- **गणतांत्रिक चीन** - श्री फिलिक्स ली एवं श्रीमती यू येन और श्री जॉर्ज हेसियो
- **फिलीपाइन्स, वियतनाम**- श्री क्लाउस एवं श्रीमती नाडिया हेल्विग

आस्ट्रेलिया - सुश्री लारेन डोनेमन
न्यूजीलैंड - श्री रॉस रिनोल्डस

केंद्रीय आचार्य/आचार्या के उत्तरदायित्वः

१. यद्यपि केंद्र के सारे प्रशासनिक कार्य का उत्तरदायित्व केंद्रीय आचार्य/आचार्या द्वारा नियुक्त ट्रस्टियों का होगा, फिर भी केंद्रीय आचार्य/आचार्या को यह सुनिश्चित करना होगा कि हरेक काम समय पर और स्थापित दिशा-निर्देश के अनुसार (स्थानीय सरकार के नियमों के अनुसार) ही हो।

२. शिविर/साधना संबंधी सारे कार्य का उत्तरदायित्व केंद्रीय आचार्य/आचार्या पर है। वह चाहे तो स्थानीय सहायक आचार्य/आचार्या, वरिष्ठ सहायक आचार्य/आचार्या, पूर्ण आचार्य/आचार्या या धर्मसेवकों की सहायता ले सकता/सकती है।

३. धर्मसेवकों को प्रशिक्षित करना केंद्रीय आचार्य/आचार्या का उत्तरदायित्व है।

४. यह भी इनकी जिम्मेदारी है कि केंद्र की त्रैमासिक रिपोर्ट समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या तथा विपश्यना विशोधन विन्यास को भेजें।

सभी केंद्रीय आचार्यों ने जिस स्वीकृति पत्र में हस्ताक्षर किया है उसमें उनके अन्य कर्त्तव्य भी परिभाषित हैं। संक्षेप में, केंद्र के प्रति अपनी जिम्मेदारीयों का निर्वाह करना तथा यह सुनिश्चित करना कि काम स्थापित निर्देशानुसार हो रहा है। इन कर्तथ्यों को पूरा करने के लिए वे जब चाहें अपने समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या से राय ले सकते हैं।

समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या का उत्तरदायित्व :

१. अपने क्षेत्र में विपश्यना का विकास तथा प्रचार-प्रसार। अस्थायी शिविरों का आयोजन, लघु-आनापान शिविरों का आयोजन, भिन्न-भिन्न प्रकार के समूहों तथा संस्थानों में विपश्यना के बारे में परिचय-सत्रों का आयोजन करना इत्यादि।

२. जब आवश्यकता हो तब अपने क्षेत्र के केंद्रीय आचार्य/आचार्या को सहायता देना।

३. अपने क्षेत्र में सुनिश्चित करना कि विपश्यना संबंधित कार्य परम पूज्य गोयन्काजी द्वारा दिए निर्देशों के अनुसार ही चल रहे हैं।

४. अपने क्षेत्र में नए केंद्र की स्थापना के अनुरोध को जांचना और निकट के केंद्रीय आचार्य/आचार्या या अन्य पूर्ण आचार्य/आचार्या से विचार-विमर्श कर निर्णय करना।

५. अपने-अपने क्षेत्र में सहायक आचार्य/आचार्या, वरिष्ठ सहायक आचार्य/आचार्या तथा पूर्ण आचार्य/आचार्या की समस्याओं को सुलझाना।

६. अपने-अपने क्षेत्रों में सहायक आचार्यों के प्रशिक्षण को सुनिश्चित करना। प्रशिक्षण की प्रणाली विश्वभर में सबके लिए समान रहेगी। अतः सुनिश्चित करें कि अपने क्षेत्र के सभी सहायक आचार्य/आचार्या, वरिष्ठ सहायक आचार्य/आचार्या, पूर्ण आचार्य/आचार्या तीन वर्ष में एक बार सहायक आचार्य/आचार्या कार्यशाला में अवश्य भाग लें।

७. स्थानीय भाषाओं में धर्म-साहित्य के अनुवाद का उत्तरदायित्व उनका ही होगा।

८. अपने क्षेत्र के सहायक आचार्यों के शिविर में सेवा देने की समय-सूची तैयार करने का उत्तरदायित्व उनका ही होगा।

९. सभी आचार्य/आचार्या किसी योग्य साधक का नाम सहायक आचार्य/आचार्या बनाने के लिए ए. टी. किट की सूचनाओं के अनुसार संस्तुत कर सकते हैं। वे अपनी संस्तुति समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या के पास भेजेंगे जिस पर समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या तत्कालीन निर्देशों के अनुसार आगे की कार्यवाही करेंगे।

१०. समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या यह भी तय करेंगे कि अपने क्षेत्र के किस केंद्र पर दीर्घ शिविर आयोजित हो।

११. वे विपश्यना विशोधन विन्यास को त्रैमासिक रिपोर्ट सौंपेंगे।

संक्षेप में, समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित करें कि जो मार्ग-निर्देशन निर्धारित किये गये हैं उसके अनुसार ही उनके क्षेत्र में विपश्यना का कार्य-कलाप चल रहा है।

अन्य मार्गनिर्देश :

· "सयाजी ऊ बा खिन की परंपरा में पू. गोयन्काजी द्वारा प्रशिक्षित"– इस परंपरा में परम पूज्य गोयन्का प्रमुख आचार्य हैं। उनके निर्देशों का पालन हमें हर समय करना होगा तथा समय-समय पर उनके द्वारा किये गये परिवर्तनों को भी मानना होगा।

· परम पूज्य गोयन्काजी ने अपनी बौद्धिक संपदा का सर्वाधिकार विपश्यना विशोधन विन्यास, भारत को सौंप दिया है। सभी लेख तथा उनकी रेकार्डिंग्स इसमें सम्मिलित हैं। जो भी इनका उपयोग करना चाहें, वे विपश्यना विशोधन विन्यास से पूर्वानुमति प्राप्त करके ही कर सकते हैं।

· दिसंबर २०१२ में रूपान्तरित ए. टी. किट का ही सभी पालन करेंगे।

· सारे विश्व में सभी प्रकार के प्रशिक्षण का मापदंड समान ही होगा।

· सभी प्रकार की संगणना जैसे सहायक आचार्य/आचार्या की सूची, विश्वभर के शिविरों की सूची इत्यादि को विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा ही अंतिम रूप दिया जायगा।

· सहायक आचार्यों का विश्वस्तरीय वार्षिक सम्मेलन या तो धम्मगिरि या धम्मपत्तन में हो ताकि उसमें सभी भाग ले सकें। अगर प्रत्येक वर्ष भाग न ले सकें तो कम से कम तीन वर्ष में एक बार अवश्य सम्मिलित हों, यह अपेक्षित है।

· इसके अतिरिक्त सहायक आचार्यों के सम्मेलन का विवरण, चाहे वह क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित किया गया हो तब भी उसके निष्कर्ष को विश्व के सभी पूर्ण आचार्यों के साथ बांटा जाय।

· टेप डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम जैसा अभी है वैसा ही रहेगा।

परम पूज्य गोयन्काजी की अनुपस्थिति में :

· प्रशिक्षण सामग्री में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

· ए. टी. किट या प्रशिक्षण सामग्री में परिवर्तन की आवश्यकता पड़े तो विश्वभर के समन्वयक क्षेत्रीय आचार्यों की राय से किया जाना चाहिए। अगर ७५% आचार्यों की समान राय हो तो ही परिवर्तन करना चाहिए (इस प्रक्रिया का समन्वय विपश्यना विशोधन विन्यास करेगा)।

· केंद्रीय आचार्य/आचार्या की अचानक हुई अनुपस्थिति में समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या, निकट के केंद्रीय तथा उस क्षेत्र के अन्य पूर्ण आचार्य/आचार्याओं के साथ परामर्श कर नई नियुक्ति करेंगे।

· समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य/आचार्या की अचानक हुई अनुपस्थिति में उस क्षेत्र के पूर्ण आचार्य/आचार्या तथा वरिष्ठ सहायक आचार्य/आचार्या (७५% समान राय से) नई नियुक्ति करेंगे।

पूज्य गुरुदेव का स्वास्थ्य एवं सक्रियता

पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य में अच्छा सुधार है। परंतु उससे कई गुना अधिक आवश्यक अधूरे काम अभी पूरे करने हैं। साधकों की मंगल कामनाएं भी काम कर ही रही हैं। १८ नवंबर से ३ दिसंबर का उनका स्वयं-शिविर अत्यंत बलदायक सिद्ध हुआ। मैत्री के समय उन्होंने जो उद्‌गार व्यक्त किये वे बड़े प्रेरणादायक हैं--

''मेरे प्यारे धर्मपुत्रो-धर्मपुत्रियो!

शिविर की मंगल मैत्री तो अभी सुनी ही। इसके अतिरिक्त मैं क्या कहूं। एक विशेष बात जो ध्यान में आती है वह यह कि यदि किसी नासमझ व्यक्ति ने तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार किया हो और तुमने बदले में दुर्व्यवहार बिल्कुल नहीं किया तो यह बहुत अच्छी बात हुई। दुर्व्यवहार तो नहीं किया, लेकिन मन में उस व्यक्ति के प्रति दुर्भावना जगायी यह बुरा हुआ। उसके प्रति मन में जो दुर्भावना जगायी, यह बहुत बुरी बात हुई। समझना चाहिए कि दुर्भावना भले मन-ही-मन जगायी, उससे उसे चोट जरूर पहुँची। इसलिए पहली बात उससे क्षमा याचना करनी है। भाई! इस प्रकार मैंने तुम्हें जो दुःख पहुँचाया, उसके लिए क्षमायाचना करता हूं। और दूसरी बात उससे भी महत्त्वपूर्ण कि उसके प्रति जो दुर्भावना जगायी थी, उससे कई गुना अधिक अब उसके प्रति सद्‌भावना जगायेंगें। कई गुना अधिक सद्‌भावना जगायें, प्यार जगायें, मैत्री जगायें, करुणा जगायें। तभी हम विपश्यना के लायक हुए और सही माने में मैत्री के लायक हुए। ऐसा मैत्रीभाव खूब बढ़ाएं, मैत्री का जीवन जीएं। मैत्री को जीवन में उतारें। सब का मंगल हो। सबका कल्याण हो। सबकी स्वस्ति-मुक्ति हो!....''

शिविर के बाद ५ दिसंबर को बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में मुंबई की चैत्य-भूमि एवं शिवाजी पार्क में आयोजित एक बड़े समारोह में पूज्य गुरुजी को आमंत्रित किया गया था। हजारों की संख्या में उपस्थित होकर लोगों ने भगवान बुद्ध तथा बाबासाहब के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इतनी बढ़ी हुई उम्र और कमजोर स्वास्थ्य के बावजूद श्रद्धालुओं पर अनुकंपा करते हुए उन्होंने ३-४ घंटे की यात्रा की और हजारों लोगों को संबोधित किया। लगभग आध घंटे तक प्रवचन व मंगल मैत्री देकर लोगों को अनुग्रहीत किया।

इसके तुरंत बाद ६ दिसंबर को आचार्यों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने इगतपुरी गये। ७ से ९ तक वहां सम्मेलन की सफलता केलिए आवश्यक निर्देश दिये। पूज्य गुरुजी एवं माताजी का सान्निध्य और उनकी मंगल मैत्री पाकर सभी साधक और आचार्यगण प्रसन्न हुए। सम्मेलन बहुत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

सम्मेलन के पूर्व विपश्यना के सफल संचालन और भविष्य में दीर्घकाल तक शासन की अभिवृद्धि के लिए इसके संगठनात्मक ढांचे को सुदृढ़ करने का काम किया। (जो इसी अंक में प्रकाशित है।)

इसके बाद अब वे अपने पारिवारिक समारोह में भाग लेने के लिए तथा अपनी जन्मभूमि और धर्मभूमि के प्रति श्रद्धांजति प्रकट करने के लिए म्यंमा जा रहे हैं। वहां के साधकों और विद्वान भिक्षुओं से मिल कर उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती है और बड़ा धर्मबल मिलता है। इसीलिए इतना कष्ट उठा कर भी दस दिन तक **चरथ भिक्खवे चारिकं** को चरितार्थ करने के लिए यह यात्रा कर रहे हैं। वहां उनके कुछ सार्वजनिक प्रवचन होंगे और पवित्र श्वेडगोन पगोडा परिसर में सामूहिक साधनाएं होंगी। तदर्थ २१ की सुबह ८ बजे मुंबई से प्रस्थान करके विशेष विमान से सीधे रंगून जायँगे और ३० की सायं ४ बजे वहां से मुंबई के लिए रवाना होंगे।

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय उनकी यात्रा की सफलता और सुखद स्वास्थ्य के लिए हम सब की मंगल कामनाएं!

सब का मंगल हो!

सयाजी ऊ बा खिन की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में
पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

२० जनवरी, २०१३, **रविवार**, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क** : **मो.** 09892855692, 09892855945, **फोन नं.:** 022-28451170, 33747543, 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **११** से सायं ५ तक, प्रतिदिन) **ईमेल Registration:** oneday@globalpagoda.org; Online Regn: www.vridhamma.org

ग्लोबल पगोडा में पालि पाठ्यक्रम - २०१३

विपश्यना विशोधन विन्यास, **ग्लोबल पगोडा में– अनिवासीय पाठ्यक्रम– पालि व्याकरण, सुत्त, सैद्धान्तिक विपश्यना इत्यादि। शिक्षण का माध्यम–** पालि-अंग्रेजी, पालि-मराठी, पालि हिन्दी; **अवधि–** ०१-०२-२०१३ से ३०-९-२०१३ तक (८ मास, सप्ताह में एक बार, ११ से ५ बजे तक); **आवेदन पत्र प्राप्त करने का स्थल और तिथि -** V. R. I., ग्लोबल पगोडा में- १ से २० फरवरी तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - २०-०१-२०१३.

आवासीय पाठ्यक्रम (परियत्ति और पटिपत्ति):--

३० दिवसीय प्रारंभिक पालि-मराठीः अवधि - ०१-०१-२०१३ से ३१-०१-२०१३ तक; **फार्म जमा करने की अंतिम तिथि -** ०१-१२-२०१२;

३० दिवसीय उच्चतर पालि-हिन्दी (V. R. I. इगतपुरी में प्रारंभिक पालि-हिन्दी पाठ्यक्रम **किये छात्रों के लिए) अवधि -** ०१-०५-२०१३ से ३१-५-२९१३ तक; **आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि -** ०१-०४-२०१३;

९० दिवसीय पाठ्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि - ०१-०७-२०१३ से ३०-९-२९१३ तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - १५-५-२०१३;

सब के लिए कंप्यूटर पर आवेदन पत्र -- www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं. **संपर्कः** विपश्यना विशोधन विन्यास (V. R. I.), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– डॉ शारदा संघवी – फोनः (०२२-२३०९५४१३) ०९२२३४६२८०५, **ईमेलः s_sanghvi@hotmail.com;** २) श्रीमती बलजीत लाम्बा : फोनः ०९८३३५१८९७९; ३) अलका वेंगुर्लेकरः मोबाईल – ०९८२०५८३४४०.

ग्लोबल विपश्यना पगोडा हेतु कार्पस फंड

ग्लोबल पगोडा के निर्बाध संचालन हेतु एक कार्पस फंड एकत्र किया जा रहा है ताकि भविष्य में इसका रख-रखाव बिना किसी बाहरी दबाव के सफलतापूर्वक होता रहे और म्यंमा में सद्धर्म को सुरक्षित रखने तथा भारत वापस भेजने के लिए सयाजी ऊ बा खिन और म्यंमा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का यह **अद्‌भुत पावन प्रतीक** हजारों वर्षों तक कायम रहे। इस **कार्पस फंड** का उपयोग कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं कर सकता, बल्कि सरकारी बैंक में जमा इस धन के ब्याज से पगोडा का दैनिक व्यय और रख-रखाव संबंधी कार्य पगोडा-संरक्षण के नियमानुसार होता रहेगा। दान भेजने हेतु विवरण इस प्रकार हैः--

१. भारत में कोर बैंकिग के द्वारा **ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन** को दान भेजने के लिए भारत की किसी भी **बैंक ऑफ इंडिया** की शाखा से पैसे भेज सकते हैं। विवरण निम्न प्रकार है--

"Global Vipassana Foundation"
'Axis Bank India', A/C. NO: 911010032397802
SWIFT CODE: AXISINBB062,
IFSC CODE: UTIB0000062, MICR CODE: 400211011,
BRANCH: Malad west branch, Mumbai-400064.

२. भारत के बाहर से दान भेजने वालों के लिए विवरण निम्न प्रकार है-- **(SWIFT transfer to 'Bank of India')**
"Global Vipassana Foundation"
Name of the Bank : **"J P Morgan Chase Bank"**
Address : New York, US, A/c. No. : 0011407376, Swift: CHASUS33.

चेक/ड्राफ्ट कृपया निम्न पते पर प्रेषित करें--

ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, रजि. ऑफिस-- ग्रीन हाऊस, २रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई- 400023. *फोन-* **022-22665926**.

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती शारदा जैन, बंगलुरु
२. श्री मनोहर मिर्जे, कोल्हापुर
३. श्री सुवर्ण बरड़िया, कोल्हापुर
४. श्रीमती सुनंदा मानधना, कोल्हापुर
5. Mr. Michael Gelber, Canada
6-7. Mr. Stephen Hanlon & Mrs. Rebecca York-Hanlon, USA
8. Mr. Craig Archambault, USA

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री सुनीलसिंह बायस, पारली
२. श्री विनोद पारख, फरीदाबाद
३. श्री राजाभाऊ राउत, वासिम
४. श्री बालकृष्ण गजभिये, नवी मुंबई
५. श्री सुभाष मुंदाड़े, अमलनेर
6. Mrs. Hirani Indra Malagala, Sri Lanka
7. Mrs. Kian Ber Chiam, Singapore

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्री वाडला कृष्णमूर्ति, हैदराबाद
२. श्री वी. तिरुपति रेड्डी, हैदराबाद
३. श्री बीरम वंमसी मोहन, हैदराबाद
४. श्री बालकृष्ण मेकाला, हैदराबाद
५. श्री वेमुला श्रीनिवास, सिकंदराबाद
६. श्री ए. शंकर, निजामाबाद, आंध्रप्रदेश
७. श्री इंदुर राजा रत्नम, निजामाबाद, आ.प्र.
८. श्री बी. अणजी रेड्डी रंगा रेड्डी
९. श्री सेडेन्की रेड्डी रंगा रेड्डी
१०.श्री शिवचरण सिंह, नलगोंडा, आ. प्र.
११. श्री करुमुला श्रीनिवास रेड्डी, नलगोंडा, आ. प्र.
१२. श्री पूंडरू नारसा रेड्डी, आदिलाबाद, आ. प्र.
१३. श्री नूतन कलमकर, वर्धा
१४. श्रीमती पुष्पा जुंघारे, चंद्रपुर
१५. श्री वांगनू डांगे, चंद्रपुर
१६. कु. श्वेता रामटेक, नागपुर
१७. श्री नीलेश आटे, नागपुर
१८. श्री शेषराव सिरसाट, अमरावती
१९. श्री दिनकर हेलोन्डे, बुलढाणा
२०. श्री धम्मदीप वानखेड़े, अकोला
२१. श्री अनिलकुमार बन्सोड, तकटघाट
२२. श्री पुरुषोत्तम दुधे, गडचिरोली
२३. श्री विजय हेडाऊ, गडचिरोली
२४. कु. पदमा धोंगड़े, गडचिरोली
२५-२६. श्री अनल और श्रीमती रजनी लॉरेंस, भटिंडा
27. Mr Jim Rees, Australia
28. Ms NG Shirley, Hong Kong
29. Mr.Tyler McGrath, Washington, USA
30. Mr.Josh McEwen, Washington, USA
31. Mr Billy Simmons, Washington, USA
32. Ms.Chaya Kudla, Washington, USA
33. Mrs.Shashi Sheth, Washington, USA
34. Mrs.Shubhra Jain,California, USA
35. Ms.Elizabeth Lily Barry, California, USA
36-37. Mr.Srinivas Srinkanth & Mrs.Preethi Srinkanth,Texas, USA
38. Mr.Thomas Edward Allen,Illinois, USA
39. Ms.Naomi Jonas, Ontario, Canada

दोहे धर्म के

पंथ दिखाया बुद्ध ने, चलना अपना काम।
चलते चलते आप ही, मिटते दुःख तमाम॥
चल साधक चलते रहें, देश और परदेश।
धरम चारिका से कटें, सब के मन के क्लेश॥
जीवन में जागे धरम, तन मन पुलकित होय।
अपना भी मंगल सधे, जन जन मंगल होय॥
जिस पथ पर चलते हुए, चित्त शुद्ध हो जाय।
वह पथ ही कल्याण-पथ, धर्म-पंथ कहलाय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

चल साधक चलता रवां, जन सेवा रै काम।
इब क्यां रो बिसराम है, इब क्यां रो आराम॥
जन जन री सेवा करां, यो जीवन रो ध्येय।
यो ही म्हारो स्रेय है, यो ही म्हारो प्रेय॥
चल भिक्खू चलता रवां, अबै कठै बिसराम?
बहुजन हितसुख कारणै, है आराम हराम॥
आठ अंग रो धरम पथ, दियो बुद्ध भगवान।
पग पग चलतां आप ही, पावां पद निरवाण॥
स्वदरसन रो पथ मिल्यो, मंगळ जग्यो अनंत।
टूट्या बंधन दुक्ख रा, पंथ चलंत चलंत॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556**, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा,** **28 दिसंबर, 2012**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org